हल अभ्यास प्रश्न पत्र- 4
कक्षा 12
राजनीति विज्ञान

1. क) धुरी राष्ट्र
2. ख) फैट मैन
3. सोवियत संघ का विघटन 15 गणराज्यों में हुआ ।
4. बाल्टिक गणराज्यों के नाम - एस्टोनिया , लताविया, लिथुआनिया
5. सही
6. घ) ऑस्ट्रिया
7. यूरोपियन संघ
8. 1967
9. ग) श्रीलंका
10. अब्राहम लिंकन
11. ग) 565
12. सही
13. 1989
14. लोकपाल
15. भारतीय जनता पार्टी
16. ग) घरेलू गैस (L.P.G)

17

17.1 b) 2006 1

17.2 a) आर्थिक 1

17.3 d) दक्षिण अफ्रीका 1

17.4 c) ब्राजील 1

18

18.1 c) जवाहरलाल नेहरू 1

18.2 d) उपरोक्त सभी 1

18.3b) संयुक्त राज्य अमेरिका 1

18.4 a)जवाहरलाल नेहरू

19. 1967 में । इंडोनेशिया ,मलेशिया ,फिलीपींस, सिंगापुर तथा थाईलैंड संस्थापक राष्ट्र थे।

20. 1 अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बनाए रखना ।

2 मानव अधिकारों की रक्षा ।

3 अंतरराष्ट्रीय कानूनों को बनाए रखना।

4 सतत विकास को बढ़ावा देना।

21. एक दलीय प्रणाली ; 1+1=2

1. राजनीतिक स्थिरता ।

2 सुदृढ़ शासन।

3 अनुशासन की स्थापना।

4 गुट बंदियों से दूरी। (कोई एक)

बहुदलीय प्रणाली;

1 मतदाताओं को व्यापक पसंद का अवसर मिलता है।

2 चुनावी पारदर्शिता को बढ़ाता है।

3 सरकार लोगों के प्रति उत्तरदाई व जवाबदेह होती है (कोई एक)

22. आपातकाल के समय प्रेस सेंसरशिप को लगाया जाता है जिसमें प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लग जाता है समाचार पत्र को कुछ भी छापने से पहले सरकार की अनुमति लेना जरूरी होता है। 2

अथवा

ऐसी परिस्थितियां जिसमें सामान्य नियम कानूनों के अनुसार देश का शासन नहीं चलाया जा सकता आपातकाल कहलाता है।मुझे 352, 356, 360 में इसका विशेष रूप से उल्लेख किया गया है

23. सोवियत अर्थव्यवस्था बनाम अमेरिकी अर्थव्यवस्था (4*1)

क्रम	समाजवादी अर्थव्यवस्था	पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
1	सभी संसाधनों पर समाज का अधिकार है।	संसाधनों पर पूँजीपतियों का अधिकार है।
2	अर्थव्यवस्था से संबंधित सभी निर्णय समाज की ओर से उनके प्रतिनिधि लेते है।	अर्थव्यवस्था से संबंधित सभी निर्णय पूंजीपतियों द्वारा लिए जाते है।
3	यह अर्थव्यवस्था समाज के हित में कार्य करती है।	यह अर्थव्यवस्था पूंजीपतियों के अधिकतम लाभ के लिए कार्य करती है।

4	इस व्यवस्था में आर्थिक समानता तथा पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है।	इस व्यवस्था में आर्थिक असमानता होती है तथा पूर्ण रोजगार की स्थिति नहीं होती।
5	समाजवादी अर्थव्यवस्था में मूलभूत आवश्यकताओं की वस्तुओं के उत्पादन पर बल दिया जाता है।	पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में ऐसा नहीं होता।
6	इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में कोई प्रतियोगिता की स्थिति नहीं होती।	पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति होती है।
7	समाजवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के अधिक विकल्प नहीं होते।	इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के अनेक विकल्प होते हैं।

या अन्य कोई प्रासंगिक तथ्य (कोई चार लिखे)

24. संयुक्त राष्ट्र संघ की निम्न संस्थाओं के बारे में बताएं (2+2)
i) UNICEF-

- इसका पूरा नाम "संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकाल कोष" है।
- इसकी स्थापना 11 दिसम्बर, 1946 को हुई।
- इसका मुख्यालय में न्यूयार्क में स्थित है।
- इसका मुख्य कार्य बच्चों के लिए आपातकालीन निधि एकत्रित करना तथा सम्पूर्ण विश्व में उनके विकास के कार्यों में सहायता करना है।
- इसके अतिरिक्त यूनिसेफ विश्व के समस्त भागों में बच्चों के स्वास्थ्य तथा उत्तम जीवन को सुनिश्चित करने वाले कार्यों में सहायता तथा प्रोत्साहन देता है।
- वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 193 है और यह संस्था सफलता पूर्वक कार्य कर रही है।

कोई चार तथ्य लिखे

ii) ILO-

- इसका पूरा नाम 'अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन' है।
- यह संयुक्त राष्ट्र की सबसे पहली एजेंसी है।
- वर्तमान में इसकी सदस्य संख्या 187 है और इसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में स्थित है।
- यह संस्था श्रमिकों के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रम मानकों/ नियमों को तय करती है।

- इसके अतिरिक्त, महिलाओं तथा पुरूष श्रमिकों को उत्पादक कार्यों में संलग्न करने लिए प्रोत्साहन तथा कार्य स्थल पर उनके लिए सुरक्षा, समता तथा स्वाभिमान की स्थिति बनाना भी इस संगठन के कार्य है।

कोई चार तथ्य लिखे

25.गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता के तर्क (4×1)

- एक संगठित मंच- गुटनिरपेक्षता नव स्वतंत्र देशों को एक मंच प्रदान करती है जहां वे अपनी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की चर्चा करते हैं तथा समाधान प्राप्त करते हैं।
- स्वतंत्र विदेश नीति में सहायक- गुटनिरपेक्षता ने ही छोटे छोटे देशों को इतना साहस दिया है कि वे महाशक्तियों के सामने झुके बिना अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बना पाए।
- परस्पर सहयोग- गुटनिरपेक्ष संगठन में जो देश शामिल हुए उन सबका इतिहास समान है इसलिए वे एक दूसरे की समस्याओं को बखूबी समझते है इसलिए आज भी परस्पर सहयोग से विकास की ओर अग्रसर है।
- वैकल्पिक विश्व व्यवस्था-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नव स्वतंत्र देशों के संगठित समूह के रूप में अपनी आवाज़ रखते हैं।

अथवा

क्यूबा अमेरिका से सटा हुआ एक दीप है। 1962 में सोवियत संघ ने अपनी मिसाइलें क्यूबा के चारों तरफ तैनात कर दी थी जिससे वह अमेरिका की घेराबंदी कर सके। उस समय सोवियत संघ के नेता ख्रुश्चेव और अमेरिका के नेता केनेडी थे। अमेरिका को इसकी भनक 15 दिन के बाद लगी। अमेरिका ने भी अपने जंगी बेड़े आगे बढ़ा दिए। परंतु बाद में दोनों देशों के नेताओं के द्वारा बातचीत की गई और आगे की कार्यवाही को रोका गया ऐसे ही क्यूबा मिसाइल संकट के नाम से जाना जाता है।

26. पाकिस्तान के लोकतांत्रिकरण में कठिनाइयाँ (4×1)-

- इस्लामिक कट्टरवाद का राजनीतिक प्रभाव- पाकिस्तान का जन्म धर्म के आधार पर है इसलिए वहां कट्टरपंथी ताकतें ज्यादा हावी है।
- सेना का वर्चस्व- भारत से सुरक्षा का भय उत्पन्न कर सेना ने आरम्भ से ही राजनीतिक व्यवस्था में अपना प्रभाव बना रखा है।
- आतंकवाद का प्रभाव- कट्टरवादी तत्वों के समर्थन के कारण पाकिस्तान में इस्लामिक आतंकवाद ने अपनी जड़ें बना ली है।
- अंतर्राष्ट्रीय हित- पाकिस्तान में लोकतांत्रिक शासन चले, इसके लिए कोई खास अंतर्राष्ट्रीय समर्थन नही मिलता है।

या

भारत और बांग्लादेश के मध्य दो सहयोग के मुद्दे- (2×1)

- **ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग- पूर्वी भारत, भूटान, नेपाल एवं बांग्लादेश के बीच पावर पूल की व्यवस्था की गई है। भारत बांग्लादेश में परमाणु रिएक्टर स्थापित करेगा तथा तकनीकी सहायता भी देगा।**
- **सांस्कृतिक आदान प्रदान-**
- **यात्राओं एवं वार्ताओं का दौर- दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की परस्पर यात्राएं- 2010 में बांग्लादेश की शेख हसीना और भारत से 2011 में डा.मनमोहन सिंह और 2015 में नरेंद्र मोदी की यात्राएं महत्वपूर्ण है।**

भारत और बांग्लादेश के मध्य दो असहयोग के मुद्दे- (2×1)

- **शरणार्थियों की समस्या- भारत में सीमा क्षेत्र से अवैध बांग्लादेश से शरणार्थियों का आना जारी है। जिसका भारत हमेशा विरोध करता रहा है।**
- **तीन बीघा गलियारा- बांग्लादेश के एक क्षेत्र जो पश्चिमी बंगाल से घिरा हुआ है। उसको बांग्लादेश की मुख्य भूमि से जोड़ने के लिए भारत की ओर से तीन बीघा ज़मीन दी गई। जिसकी प्रकृति अनिश्चित है।**
- **गंगा , ब्रह्मपुत्र नदी जल विवाद- भारत द्वारा फरक्का बैराज का निर्माण और संचालन होता है जो बांग्लादेश में पानी की असमय आपूर्ति करके उनके लिए समस्या उत्पन्न करता है।**

27. 'नीति आयोग'-

- **1 जनवरी 2015 को योजना आयोग के स्थान पर 'नीति आयोग' का गठन किया गया।**
- **केन्द्रीय सरकार को केंद्र व राज्य स्तर की नीतियों के निर्माण में आवश्यक व तकनीकी परामर्श देने के उद्देश्य से 'नीति आयोग' की स्थापना की गई।**
- **भारत के प्रधानमंत्री इसके पदेन सभापति है तथा वे उपसभापति की भी नियुक्ति करते हैं।**
- **वर्तमान में नरेंद्र मोदी सभापति एवं डा. राजीव कुमार हैं।**
- **राष्ट्रीय सुरक्षा तथा आर्थिक नीतियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करना,**
- **सामरिक क्षेत्र में नीतिसंगत कार्यक्रमों का दीर्घकालिक ढांचा तैयार करना,**
- **केंद्र सरकार का वैचारिक केंद्र अथवा प्रबुद्ध मण्डल के रूप में कार्य करना,**
- **ऊर्ध्वमुखी दृष्टिकोण तथा सभी राज्यों की समान भागीदारी सुनिश्चित करता है।**

28.

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	राज्य का नाम
1)	D	बिहार
2)	C	पंजाब
3)	B	पश्चिम बंगाल
4)	E	उत्तर प्रदेश
5)	A	केरल

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए

1. **फखरुद्दीन अली अहमद**
2. **1950 -1970**
3. **जनता पार्टी**
4. **मई 1977**
5. **राम मनोहर लोहिया एक समाजवादी नेता थे जिन्होंने गैरकांग्रेसवाद की शुरुआत की I**

29.

29(i) यह कार्टून 1969 में राष्ट्रपति पद के चुनाव के बाद के समय का है । 1969 में कांग्रेस पार्टी दो भागों में बट गई थी । कांग्रेस(ओ) तथा कांग्रेस(आर)। 1

29(ii) इस कार्टून में दिखाई गई महिला श्रीमती इंदिरा गांधी हैं । वह इसलिए खुश हैं क्योंकि वह राष्ट्रपति पद पर जिस व्यक्ति को चाहती थी उसमें वह कामयाब हो गई थी । 2

29(iii) गले में फूलों की माला पहने व्यक्ति का नाम श्री वी.वी. गिरी है जिन्होंने राष्ट्रपति पद का चुनाव जीता था । इस कार्टून में उन्हें एक विजई मुक्केबाज के रूप में दिखाया गया । 2

<u>केवल दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए</u>

आजादी के बाद भारत में लगातार तीन दशकों तक कांग्रेस पार्टी की जीत के कारण ऐसी परिस्थितियां पैदा हुई जिससे यह माना जाने लगा कि भारत में एक दलीय व्यवस्था स्थापित हो गई है इसके निम्नलिखित कारण थे-

- कांग्रेस पार्टी का आजादी की लड़ाई में भाग लेना।
- कांग्रेस का एक सशक्त दल के रूप में उभरना।
- कांग्रेस का एक विचारधारात्मक संगठन के रूप में होना।

- अन्य दलों का सशक्त नहीं होना।
- कांग्रेस दल में चमत्कारिक नेतृत्व का होना।
- कांग्रेस दल का जनता से जुड़ाव।

30. वैश्वीकरण के फलस्वरूप विकासशील देश आंतरिक मामलों से लेकर बाहरी मामलों तक कई पहलुओं में सकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं।
वैश्वीकरण ने विकासशील देशों की आर्थिक गतिविधियों को बल प्रदान किया है। इससे इन देशों में गरीबी की समस्या हल हो गई है। अतीत में व्यापार बाधाओं के कारण कम विकसित देशों के लिए यह असंभव था।
विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन ने इन कम विकसित देशों को बाजार सुधार के माध्यम से आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया है। कई देशों ने टैरिफ, करों को हटाकर इन परिवर्तनों की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है।
विकासशील देशों में स्वास्थ्य और शिक्षा प्रणाली ने वैश्वीकरण के योगदान के कारण सकारात्मक तरीके से लाभ उठाया है।
वैश्वीकरण ने विकासशील देशों के लिए कई समस्याएं भी प्रस्तुत की है।
एक और जहाँ धनी और निर्धन के बीच खाई बढ़ी है।
वहीं शिक्षित और पेशेवर लोगो का विकसित देशों में पलायन भी एक बड़ी समस्या बना है।

Or

30) वैश्विकरण या ग्लोबलाइजेशन वह प्रक्रिया है, जिसमें व्यापार, सेवाओं या तकनीकों का पूरे संसार में वृद्धि, विकास और विस्तार किया जाता है। यह विभिन्न व्यापारों या व्यवसायों का पूरे संसार के विश्व बाजार में विस्तार करना है।
वैश्वीकरण एक जटिल तथा विकासशील प्रक्रिया है जिसने विश्व के राजनितिक राजनितिक,आर्थिक तथा संस्कृतिकपरिप्रेक्ष्यों को व्यापक तौर पर प्रभावित किया है।वैश्वीकरण ने वैश्विक ग्राम की अवधारणा को भी तेजी प्रदान की है. श्रम,पूँजी,वस्तु एवं सेवाओं के विस्तार ने दिन प्रतिदिन की जीवन शैली को भी बदलने का बड़ा प्रयास किया है
वैश्विकरण का सम्बन्ध नवाचारों,सांस्कृतिक परिवर्तनों एवम प्रौद्योगकी की उस गतिशीलता से भी है जो इससे पहले कभी इस व्यापक रूप में नहीं देखी गयी।
उपरोक्त आधार पर कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसने वैश्विक तौर पर सभी पहलुओं को प्रभावित करने का प्रयास किया है
31.भारत में देसी रजवाड़ों के एकीकरण में सरदार पटेल की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण थी। सरदार पटेल ने एक अधिनियम तथा प्रजातन्त्रीकरण की विधियों द्वारा अधिकांश रियासतों को भारत में मिलाया जूनागढ़ तथा हैदराबाद जैसी रियासतों ने भारत में शामिल होने से मना कर दिया था, परंतु सरदार पटेल के राजनीतिक कौशल एवं सूझ बूझ ने इन दोनों रियासत भारत में शामिल होने के लिए मजबूर कर दिया।

नए स्वतंत्र देश में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए उनकी प्रतिबद्धता एवं निष्ठां भारत राष्ट के प्रति पूर्णतया समर्पित थी , जिससे उन्हें "भारत का लौह पुरुष" नाम मिला।
सरदार पटेल की इस साहसिक एवं प्रन्श्नीय भूमिका का बेहद महत्व है तथा उनके इस योगदान के लिए उनका नाम स्वर्णिम इतिहास में लिखा जायेगा।

31-भारत के विभाजन एवं देशी रियासतों के भारत में विलय हो जाने से ही समस्याओं का अन्त नहीं हुआ और न ही राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया ही पूरी हो पाई। भारतीय प्रांतों की आंतरिक सीमाओं को निश्चित करने अर्थात् राज्यों के पुनर्गठन की समस्या विद्यमान', थी। यह कार्य भी अन्य कार्यों की तरह आसान नहीं था, क्योंकि सीमाओं का निर्धारण इस तरह करना था कि देश की भाषाई , सांस्कृतिक बहुलता की झलक मिले तथा साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता भी बनी रहे।
1947 के पश्चात् भारतीय सरकार ने इस प्रकार के निर्धारण को अस्वीकार करके भाषा आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का निर्णय लिया परन्तु भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का कार्य भी सरल नहीं था। आंध्र आन्दोलन ने तेलुगुभाषी क्षेत्रों के लिए एक अलग राज्य की मांग की।
दिसम्बर, 1952 में प्रधानमन्त्री ने आन्ध्र प्रदेश नाम से अलग राज्य बनाने की घोषणा की। आंध्र प्रदेश के गठन के साथ ही देश के दूसरे भागों में भी भाषाई आधार पर राज्यों को गठित करने का संघर्ष चल पड़ा। केन्द्र सरकार ने 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग बनाया राज्य पुनर्गठन आयोग का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य राज्यों के पुनर्गठन से सम्बन्धित सिफ़ारिशें करना था। इस आयोग की सबसे महत्त्वपूर्ण सिफ़ारिश यह थी कि राज्यों की सीमाओं का निर्धारण वहां बोली जाने वाली भाषा के आधार पर होना चाहिए। इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1956 में राज्य पुनर्गठन कानून पास हुआ तथा इस कानून के आधार पर 14 राज्य और 6 केंद्र शासित प्रदेश बनाए गए। 1956 के बाद हरियाणा, सिक्किम, नागालैण्ड नये राज्य बने।
32)गठबंधन सरकार उसे कहते है जब दो या दो से अधिक राजनीतिक दल मिलकर सरकार बनते है। गठबंधन सरकार भारत की बदलती हुई दलीय राजनीति में राजनीतिक

व्यवस्था की एक आवश्यकता रही है। 1989 से भारत में गठबंधन की राजनीति का युग आरंभ हुआ और यह है भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की एक प्रमुख विशेषता बनी रही। कई बार गठबंधन सरकारों ने बेहद कुशलतापूर्वक तथा सहयोग पूर्ण कार्य किया है वही गठबंधन सरकारों को अस्थायित्व का सामना भी करना पड़ा।

गठबंधन सरकारों की अपनी अलग कमियां है लेकिन यह कहना कि भारत में गठबंधन सरकारों का अस्तित्व समाप्त हो गया है तो उचित नहीं होगा। वही यह कहना अधिक उचित होगा कि गठबंधन सरकारों का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ है बल्कि गठबंधन सरकारों की प्रकृति में परिवर्तन आया है।

जहां एक ओर राजनीतिक दल अब गठबंधन सरकारों में सौदेबाजी की राजनीति से सहयोग की राजनीति की ओर अग्रसर हो रहे हैं तो भारत जैसे लोकतांत्रिक देश के लिए यह एक परिपक्वता का सूचक है। गठबंधन सरकारों में क्षेत्रीय विभिन्नता , सांस्कृतिक विभिन्नता को एक राजनीतिक पटल पर आने का अवसर प्राप्त होता है जो लोकतंत्र में राजनीतिक सहभागिता तथा निश्चय निर्माण में सभी समूहों की भागीदारी को बढ़ावा देता है।

अंततः यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि गठबंधन सरकारों ने भारतीय लोकतंत्र की एक नई परिभाषा तय की है।

32) अप्रैल, 1999 को मात्र 13 माह पुरानी लोकसभा को राष्ट्रपति के० आर० नारायणन ने प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी की (Imp.) सलाह पर भंग कर दिया। सितम्बर-अक्तूबर, 1999 में 13वीं लोकसभा के चुनाव करवाए गए। इन चुनावों के अवसर पर 24 राजनीतिक दलों ने मिलकर राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन (National Democratic Alliance) के नाम से एक महान गठबन्धन बनाया।

इस गठबन्धन में अधिकतर दल ही सम्मिलित थे जो बारहवीं लोकसभा में सरकार में सम्मिलित थे। इस गठबन्धन के सभी राजनीतिक दलों द्वारा तैयार साझे घोषणा-पत्र में शासन का राष्ट्रीय एजेण्डा बनाया गया जिसे गठबन्धन की प्रतिबद्धता का आधार माना गया। घोषणा-पत्र में राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण, गत्यात्मक कूटनीति, संघीय समरसता, आर्थिक आधुनिकरण, सेक्युलरवाद, सामाजिक न्याय और शुचिता के प्रति सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता अभिव्यक्त की गई है। राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन ने अपने घोषणा पत्र में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की

संवैधानिक सुरक्षा के साथ-साथ यह अपील की है कि हम पुराने पूर्वाग्रह को त्याग दें, विवादास्पद मुद्दों पर रोक लगा दें और विश्वास एवं मित्रता के बन्धन में बँध जाएं ।

घोषणा-पत्र में कहा गया कि राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन (राजग) नया है, राजग भविष्य है और राजग प्रगति तथा न्याय के लिए एक व्यापक आधार वाला आन्दोलन है। राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन को इस देश की बहुमुखी विविधता, एकता, भरपूर बहुलवाद और संघवाद का दर्पण बताते हुए घोषणा-पत्र अपना घोषणा पत्र भी प्रस्तावित किया